राजस्थानी चित्रशैली में ढूँढ़ार केन्द्र के प्रमुख कलाकार और उनकी कलाकृत्तियाँ

कु0 रीना
ललित कला विभाग
मेरठ कॉलिज, मेरठ
ईमेलः renubrt86@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

कु0 रीना

''राजस्थानी चित्रशैली में ढूँढ़ार केन्द्र के प्रमुख कलाकार और उनकी कलाकृत्तियाँ '

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 23 pp. 144-150

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

सारांश

प्राचीनकाल में जयपुर के आस–पास के स्थलों को 'ढूँढ़ाड' के नाम से जाना जाता था। 'नैणसी' ने लिखा है कि ''चवदै–चाल ढूँढ़ाड कही जै तिणशे मेल गाँव।'' तथा जिसे आज 'ढूँढ़ार' केन्द्र के रूप में जाना जाता है। अतः ढूँढ़ार स्कूल में हम अलवर, जयपुर, उनियारा, शेखावटी, करौली व भरतपुर आदि शैलियाँ व उपशैलियों का अध्ययन कर सकते हैं। ढूँढ़ार केन्द्र की अपनी निजी विशेषता एवं भौगोलिक सीमाएँ हैं। जिनके कारण यहाँ चित्रकला का आदान–प्रदान होता रहा। किन्तु शासन के मध्य बिन्दु दिल्ली एवं संस्कृति के केन्द्र ब्रज के सम्पर्क में होने से ढूँढ़ार की चित्रकला समय–समय पर नये रंगरूप में विकसित होती रही तथा ढूँढ़ार स्कूल में अलवर शैली, जयपुर शैली, उनियारा शैली और शेखावटी शैली आदि का वर्णन बहुत ही उत्कृष्टता से किया गया है।

प्रस्तावना

राजस्थानी चित्रशैली में ढूँढ़ार केन्द्र के प्रमुख कलाकार और उनकी कलाकृत्तियाँ

प्राचीनकाल में जयपुर के आस–पास के स्थलों को 'ढूँढ़ाड' के नाम से जाना जाता था। 'नैणसी' ने लिखा है कि ''चवदै–चाल ढूँढ़ाड कही जै तिणषे मेल गाँव।'' तथा जिसे आज 'ढूँढ़ार' केन्द्र के रूप में जाना जाता है। चित्रकला के उन्नत रूप से इस क्षेत्र की सीमायें और विस्तृत हो जाती हैं। अतः ढूँढ़ार स्कूल में हम अलवर, जयपुर, उनियारा, शेखावटी, करौली व भरतपुर आदि शैलियाँ व उपशैलियों का अध्ययन कर सकते हैं। किन्तु शासन के मध्य बिन्दु दिल्ली एवं संस्कृति के केन्द्र ब्रज के सम्पर्क में होने से ढूँढ़ार की चित्रकला समय–समय पर नये रंगरूप में विकसित होती रही तथा ढूँढ़ार स्कूल में अलवर शैली, जयपुर शैली, उनियारा शैली और शेखावटी शैली आदि का वर्णन इस प्रकार हैः–

जयपुर शैली

जयपुर का गुलाबी शहर देश–विदेश में अपनी चित्रकला एवं स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध है। जयपुरी जूतियाँ, बन्धेज की साड़ियाँ, काँच व लाख की चूड़ियाँ, कंगन आदि आभूषणों एवं हस्तशिल्प हेतु जयपुर को प्रसिद्धि प्राप्त है। महाराजा सवाई जयसिंह एक कलाभक्त शासक रहे हैं। इन्होंने 1727 ई0 में जयपुर नगर स्थापित किया। यहाँ के शासक कछवाहा वंश के थे। नरेश जय सिंह से पहले चित्रांकन परम्परा जो प्रायः भाऊपुरा रैनवाल की छतरी, भारमल की छतरी, आमेर महल, मोजमाबाद का महल एवं बैराट की छतरी की दीवारों आदि पर लघुचित्रों में देखने को मिलती है। शेखावटी, नवलगढ़, सीकर, लक्ष्मणगढ़, मंडावा, पिलानी, मुकुन्दगढ़ झुन्झुनू, करौली, भरतपुर, धोलापुर और टोंक आदि स्थानों की चित्राकृत्तियों पर जयपुर कलम का प्रभाव आज भी देखने को मिलता है।

अतः यहाँ पर शासकों ने अपने समय में बहुत से कलाकारों द्वारा यहाँ के दुर्गों, किलों, हवेलियों, बैराट, मन्दिरों एवं छतरियों झरोखों आदि में विभिन्न विषयों एवं विभिन्न पद्धतियों 'आलागीला', 'मोराकसी', 'आराइश', 'फ्रेस्को (सेको, बूनों), 'टेम्परा' आदि में चित्रण कार्य किया गया है। कलाकारों ने यहाँ पर नीला, पीला, लाल, हरा, ब्राउन, गुलाबी, भूरा, सफेद आदि चटक रंगों एवं सोने–चाँदी का प्रयोग किया है। यहाँ पर मुगल व कम्पनी शैली का प्रभाव भी देखने को मिलता है। यहाँ पर कार्य करने वाले में साहिबराम, बलदेव, लालचितेरा, जमुनादास, रामसवेक, गुमान, शिवदास भाटी, हीरानन्द आदि कलाकार रहे हैं।

साहिबराम

साहिबराम नामक चित्रकार जयपुर शैली के प्रमुख कलाकार माने जाते हैं। सम्राट सवाई जयसिंह (1699–1743ई0) के राज्यकाल के उत्तरार्द्ध में व्यक्ति चित्रण का प्रारम्भ साहिबराम ने किया थ। इन्होंने दरबारियों के व्यक्ति चित्र भी बनाये थे तथा ये व्यक्ति चित्र प्रमुख शैली में निर्मित हुये हैं। अतः चित्रकार का विशेष ध्यान एवं आकर्षण उनके आभूषण, वेशभूषा और शारीरिक हाव–भाव पर रहा है। नरेश 'सवाई प्रताप सिंह' व सम्राट 'सवाई जयसिंह के व्यक्ति चित्र' सफेद पौशाक पहने अनोखे एवं अपवाद हैं। जहाँ चितेरे साहिबराम ने उनके व्यक्तित्व और उनकी आत्मा को छूने की कोशिश की है। साहिबराम ने एक रंगीन रेखाचित्र 'पाल' और 'ग्लिमन' सेनसेउअस लाइन, लॉस ऐंजिल्स 1976 के मुख पृष्ठ पर छपा है। ये कलाकृत्तियों में व्यक्ति के स्वभाव एवं चरित्र पर ध्यान देकर उनके नाक–नक्श और

भाव भंगिमाओं पर अत्यधिक जोर देते और उन्हें यथार्थ रूप में चित्रित करते हैं और पृष्ठभूमि में हल्के दृश्य–चित्र को दर्शाते हैं।

कलाकार साहिबराम के अन्य हस्ताक्षर सहित व्यक्ति चित्र (शबीह) जो महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय में संग्रहित हैं जो कि इस प्रकार हैं–

- ए0जी0 1323, विदेशी (1750–1800ई0)
- ए0जी0 1382, रास मण्डल (1779–1803ई0)
- ए0जी0 1403, महाराजा सवाई ईश्वरी सिंह जयपुर का (1743–50ई0)
- ए0जी0 1402, सवाई जयसिह, प्रथम जयपुर का (1745–50ई0)
- ए0जी0 1404, महाराजा सवाई माधोसिंह, प्रथम जयपुर का (1750–1767ई0)
- ए0जी0 1408, महाराजा सवाई जगत सिंह (1803–1818ई0)
- ए0जी0 1409, महाराज सवाई जयसिंह, तृतीय (1818–1834ई0)

रामजीदास

रामजीदास जयपुर कलम के एक प्रतिभा सम्पन्न चित्रकार रहे थे और वे व्यक्ति चित्रण में बहुत पारंत थे ये यथार्थ, जीवन्त एवं सामान्य शैली में चित्रण करते थे। रामजीदास परम्परागत तकनीक से कलाकृत्ति के विषयों को पार्श्व में प्रदर्शित करते थे तथा वह पूर्वमुख और तीन तिहाई पार्श्व में भी व्यक्ति चित्रण सरलता एवं प्रवीणता से पूरा कर लेते थे। इनके द्वारा निर्मित अधिकांशतः राजकीय व्यक्ति चित्र वसली या एलबम पर चस्पा है। इनके द्वारा चित्रित कलाकृत्तियाँ इस प्रकार है– व्यक्ति चित्र– दीवान नन्दलाल, श्यामजी तिवारी, सहज सिंह, अजित सिंह, शेखावत, अनिरूद्ध सिंह, दिलीप सिंह, सवाई प्रताप सिंह, बालचन्द, खुशहालीराम बोहरा जीवराज सिंह आदि है। इनके अलावा (ए0जी0 631.7) रतनी भगतन, (ए0जी0 634.76) कतानी किमपाली भगतन (ए0जी0 820.76), छन्नु कलावन्त आदि चित्रित किये गये हैं।

अलवर शैली

सन् 1775 ई0 में जयपुर कलम से अलग होकर अलवर उपशैली को राजा राव प्रताप सिंह ने स्वतन्त्र रूप से स्थापित किया। अलवर नगर दिल्ली और जयपुर रेलमार्ग पर स्थित है। राजा राव प्रताप सिंह ने अपनी सर्वप्रथम राजधानी राजगढ़ से हटाकर 1775 ई0 में अलवर को बनाया था। अलवर कलम को जयपुर तथा मुगल का मिश्रित रूप माना जाता है। अन्य विद्वानों के अनुसार अलवर में जो एक स्वतन्त्र चित्रशैली का उद्‌भव हुआ उसी को अलवर शैली नाम दिया। अलवर राज्य की स्थापना के समय मुगल कलम अपने ह्रास (पतन) की ओर बढ़ रही थी। दिल्ली में जितने भी चित्रकार थे वे यहाँ से राजस्थान के 'ढूँढ़ार' केन्द्र के अलवर प्रदेश में जा बसे। इन कलाकारों को सम्राट प्रताप सिंह ने आश्रय प्रदान किया अतः राजा बख्तावर सिंह के पश्चात सम्राट विनय सिंह के काल में चित्रकला की बहुत उन्नति हुई। यहाँ पर चित्रकारों, सुलेखकों, जिल्दसाजों, हाशियाकारों, आलेखकारों आदि की संख्या बहुत अधिक थी तथा इनके द्वारा लघु चित्र, वसली चित्र, पोथी चित्र, भित्ति चित्र व लिपटवाँ पटचित्र आदि को निर्मित किया गया है तथा अलवर शैली के प्रमुख कलाकारों में डालूराम, बलदेव, गुलाम अली, सालिगराम आदि

रहे हैं।

डालूराम (1770–1815)

डालूराम अलवर शैली में कार्य करने वाले चित्रकार रहे हैं। अतः ये भित्ति चित्रण में प्रवीण थे। राजा प्रताप सिंह के शासनकाल में जयपुर से अलवर आने वाले दो चितेरे 'शिवकुमार' और 'डालूराम' थे। डालूराम यहीं पर राजकीय चित्रकार नियुक्त हो गये। तथा उत्कृष्ट चित्रांकन के कारण सम्राट प्रताप सिंह ने डालूराम चितेरे को राजगढ़ के दुर्ग में 'शीशमहल' पर भित्ति चित्रण करने का कार्य सौंप दिया ये भित्ति चित्र अलवर कलम की आरम्भिक सर्वोत्तम कलाकृतियाँ माने जाते हैं। अलवर कुछ दूर राजगढ़ के मजबूत दुर्ग के ऊपरी भाग में एक उत्कृष्ट 'शीशमहल' निर्मित है। इसमें विभिन्न चटकीलें रंगों के शीशे की जड़ाई के महत्वपूर्ण उदाहरण प्रदर्शित है। तथा दुर्ग के भित्ति चित्रों में 'रामचरित्र', 'कृष्ण चरित्र', दरबार, संगीत, नायिकाएँ आदि विषयों पर चित्रांकन देखने को मिलता है।

'गोवधर्नधारण', 'हिण्डौला', 'रामलीला', 'गौचारण', 'राम का धनुष भंग', 'वेणीगुंथन', 'राजतिलक' आदि चित्र कृष्ण और राम से सम्बन्धित है। प्रकृति एवं गायों का सतरंगा चित्रांकन बहुत महत्वपूर्ण है। 'धनुष भंग' और 'राजतिलक' का चित्र बड़ा बना है। इसमें राजस्थानी कला का स्थापत्य, घोड़े व हाथियों की सवारी, केले के गुच्छे एवं समूह चित्राकृत्तियों का चित्रण अजन्ता के चित्रों की याद दिलाते हैं। सितार, तबला व सारंगी बजाती हुई द्वारपालिकाओं एवं गणिकाओं का अंकन भी बहुत ही सुन्दर किया गया है। श्रृंगार करती हुई नायिकाओं व दासियों का चित्रण मनोहारी है। 'शीशमहल' के भित्ति चित्रों का कार्य अलवर षैली के इतिहास में प्रारम्भिक व उल्लेखनीय कार्य रहा है।

बलदेव (1790–1857)

चित्रकार सम्राट बख्तावर सिंह के शासनकाल में दिल्ली से अलवर आये थे। बलदेव ने 1790 से 1857 ई0 तक राजा राव बख्तावर सिंह तथा सम्राट विनय सिंह के शासनकाल में चित्रण का उल्लेखनीय कार्य किया।

'वक्ष खोले हुए नायिका' की कलाकषति में रेखांकन की नफासत और परदाज का कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। हाथी दाँत की अंडाकार छोटी पटली पर 'राम की सवारी' का विशाल चित्रण बलदेव कलाकार की साधना का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। तथा इस प्रकार राजा राव बख्तावर सिंह साधुओं, फकीरों के साथ अंकित की गयी समूह चित्राकृति भी कलाकार की दाय है। बलदेव राजा राव विनय सिंह के राज्यकाल में ही शाही चित्रकार था। स्वयं उससे चित्रकारी सीखते थे। 'गुलिस्तां' की कलाकृत्तियों के निर्माण में बलदेव का विशेष योगदान रहा है।

सालिगराम (1790–1845 ई0)

सालिगराम का जन्म 1790 ई0 में हुआ था। सालिगराम जयपुर से तथा बलदेव दिल्ली से लगभग एक ही समय अलवर आए। वे जयपुर सूरतखाने के प्रमुख चित्रकार रहे थे अलवर आकर उन्होंने स्थानीय कलम की विशेषताओं को धीरे–धीरे अपनी शैली में सम्मिलित कर लिया। सम्राट बख्तावर सिंह और विनय सिंह के दरबारी चित्रकार सालिगराम रहे हैं। सालिगराम द्वारा चित्रित कलाकृत्तियाँ इस प्रकार हैंः– 'राग–रागिनी' का सैट चित्रकार द्वारा सन् 1836 ई0 में निर्मित किया गया और यह अलवर संग्रहालय में सुरक्षित है। जिसमें 30 रागिनियों और 6 रागों की चित्राकृतियाँ इन्होंने बहुत ही सुन्दर ढ़ग से चित्रित

की है तथा चित्र संयोजन के दृश्टिकोण से इनका चित्र 'दीपक रागिनी' कान्हड़ा कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

इनके द्वारा 'कुम्मैत–घोड़ा' चित्रित किया गया है। 'देवी और शुम्भ आकाश में लड़ते हुए' यह महाराज सवाई प्रताप सिंह के राज्यकाल में 1799 ई0 में 9 चितेरों द्वारा 'दुर्गापाठ' श्रृंखला में 102 कलाकृत्तियाँ निर्मित की गयी थी। उन चितेरों में सालिगराम भी थे। 'कृश्ण व बलराम में युद्ध', 'श्रीमद्भागवत' के 10वें स्कंद की श्रृंखला पर 1792 में सालिगराम के साथ अन्य कलाकारों ने मिलकर 366 कलाकृत्तियों को निर्मित किया।

गुलाम अली (1815–1857)

'गुलाम अली' का जन्म 1815 ई0 में हुआ था। चित्रकार गुलाम अली दिल्ली कलम से अलवर दरबार की सेवा में आये। अतः इनके द्वारा बनायी गयी चित्राकृत्तियाँ कला की दृष्टि से उल्लेखनीय है तथा चित्रकार गुलाम अली ने सम्राट विनय सिंह के राजदरबार में बहुत अधिक चित्रांकन किया। सम्राट विनय सिंह ने ही लिपटवाँ पटचित्रों (स्क्रोल) एवं सचित्र ग्रन्थ पुस्तकों के निर्माण में रूचि थी। 'गुलिस्तां' का चित्रण एवं सुलेखन उनके समय की एक महत्व घटना है। 'गुलिस्तां' की तीन प्रतियाँ उस समय अलंकष्त की गयी थी तथा 'भैरव रागिनी मदमाल' तथा 'भैरव रागिनी' बरारी की दो चित्राकृतियाँ चित्रकार गुलाम अली द्वारा चित्रित की गयी। जो अब अलवर संग्रहालय में सुरक्षित है। 'कुश्ती प्रदर्शन' कलाकृति सन् 1849 से 1855 ई0 के मध्य चित्रकार गुलाम अली द्वारा बनायी गयी। अतः इनके द्वारा बनायी गयी बहुत सी चित्राकृत्तियाँ अलवर संग्रहालय से संग्रहित है तथा मुगल शैली से प्रभावित होते हुए भी कलाकार गुलाम अली ने अलवर शैली के नवीन कलात्मक तत्वों को अपने चित्रांकन में स्थान प्रदान किया।

उनियारा शैली

उनियारा ठिकाना बूँदी और जयपुर क्षेत्र की सीमाओं पर स्थित है। उनियारा उपशैली ढूँढ़ार केन्द्र के अन्तर्गत आती 'नरूका' आमेर के कछवाहों में नरूजी के वंशज माने जाते हैं। यहाँ के शासकों ने अपने राज्यकाल में 'रंगमहल', 'राव–राजाओं की छतरियाँ', 'चार भुजा जी का मन्दिर', 'जगत शिरोमणि मन्दिर', 'जनानी महफिल' व 'मर्दानी महफिल' आदि पर विभिन्न कलाकारों द्वारा चित्रांकन करवाया। यहाँ पर कार्य करने वाले कलाकारों में धीमा, मीरबक्श, काशी, रामलखन भीम आदि रहे हैं। 'राम, सीता, लक्ष्मण व हनुमान' चित्राकृति मीरबक्श कलाकार द्वारा चित्रित की गयी। महाराजा मानसिंह के काल में 'शिवदास' द्वारा चित्रांकित 'स्त्री को हुक्का पीते हुए' प्रदर्शित है।

शेखावटी

शेखावटी कलम एक मरूस्थलीय भू–भाग है। इसकी स्थापना 15वीं शताब्दी में 'मोकलजी' के पुत्र 'शेखजी' द्वारा की गयी थी। शेखावी का क्षेत्रफल 3580 वर्गमील है। चित्रकला के अध्ययन की दृष्टि से यह क्षेत्र हाल ही में प्रकाश में आने लगा है। बैराठ और आमेर की भित्ति चित्र परम्परा तथा जयपुर के देवालय, महल और हवेली के चित्रण ने शेखावटी स्थल को भी प्रभावित किया है जिससे शेखावटी क्षेत्र में हवेली की चित्रकला का प्रसार विस्तृत रूप से हुआ। इसके अलावा यहाँ पर शेखावत ठाकुरों द्वारा बावड़ी, छतरी, कुएँ, किले आदि को सुरम्य भित्ति चित्रों व लघु चित्रों से ससज्जित करवाया। यहाँ पर सम्राटों द्वारा धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक विषयों से सम्बन्धित चित्रांकन परिलक्षित होता

है। 'डूंडलोद', 'नवलगढ़', 'सीकर', 'बिसाऊ', 'मंडावा', 'सूरजगढ़', 'फतेहपुर', 'रामगढ़' आदि स्थलों पर चित्रण करवाया गया है। यहाँ पर चित्रित कलाकृत्तियाँ इस प्रकार हैंः–

सूरजगढ़ में ठकुरानी जी द्वारा निर्मित्त सीताराम जी के देवालय में 'रासमण्डल' का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। प्रत्येक दो गोपियों के मध्य कृष्ण को नृत्यरत मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। ल्यात्मक नृत्य मुद्रा और आकर्षक वर्ण विधान के दृष्टिपात से यह कृति मनमोहक है। एक अन्य चित्र में शार्दूलसिंह जी की छतरी में सीताजी को अशोक वाटिका में निर्मित किया है। यहाँ पर विभिन्न राक्षसनियाँ इनका पहरा दे रही है। वाटिका के बाहर भयंकर युद्ध चल रहा है। वानर सेना विजय पाकर सीताजी तक पहुँच गयी है। सीताजी को फूल सूँघते हुए चित्रित किया गया है। लगता है कि यह दृश्य राम की विजय मिलने के बाद की स्थिति का सूचक है। एक अन्य कल्याण जी के देवालय में बने एक चित्र में श्रीराम और सीताजी बैठे है। तथा शूपर्णरखा खड़ी है। लक्ष्मण जी को राम ने संकेत द्वारा उसकी नाक काटने का आदेश दे दिया हैं यह कलाकृति अपनी अनूठी विशय वस्तु के लिए महत्वपूर्ण हैं तथा अन्य कलाकृतियाँ इस प्रकार से हैं

- कृष्ण की आठ गोपियाँ एक हाथी के रूप में 1850 (गोयनका हवेली)।
- नौ नारी कुंजर, रामगोपाल महावीर प्रसाद गोयनका हवेली (फतेहपुर)।
- श्री कृष्ण गोपी को झूला झूलाते हुए (खेतड़ी दुर्ग)।
- दो द्वारपाल, खेतानों की हवेली, सूरजगढ़।
- श्री कृष्णऔर सखा गोपियों के साथ होली खेलते हुए (खेतड़ी दुर्ग)।
- सीकर की कलामक हेवली का मुख्य द्वार।
- गोवर्धनधारण, अश्व विहार (मण्डावा)।
- झूला विलास, दशावतार, कंशवध (नवलगढ़)
- नौ नारी कुंजर और सेविकाएँ (बिसाऊ)
- वराहावतार, गोपीनाथ जी का देवालय (झुन्झनूं)

यहाँ पर कलाकारों ने फ्रेस्को सेको, बुनो, आराइश, टेम्परा आदि पद्धतियों द्वारा रासायनिक व खनिज रंगों का प्रयोग करके चित्रित किये है। तथा कलाकृतियों में विषयानुसार पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों, मानवाकृतियों की गठनशीलता, आभूषण व वेशभूषा आदि पर ध्यान केन्द्रित करते हुए ही शास्त्रीय व परम्परागत शैली में कार्य किया है। अतः शेखावटी कलम का भी राजस्थानी चित्रकला में विशेष महत्व रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. प्रताप डॉ0 रीता, *जयपुर की चित्रांकन परम्परा* (पृ0सं0 **227, 228**)
2. अग्रवाल डॉ0 आर0ए0, (कला विलास), *भारतीय चित्रकला का विवेचन* (पृ0सं0 **120**), 2002
3. नीरज डॉ0 जयसिंह एवं माथुर डॉ0 बेला, *अलवर की चित्रांकन परम्परा*, 2011
4. वर्मा डॉ0 अविनाष बहादुर, *भारतीय चित्रकला का इतिहास*

5. izkå MkW0 jhrk] *भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास*
6. गोस्वामी प्रेमचन्द, *राजस्थान की लघु चित्र शैलियाँ*, जयपुर 1972
7. शर्मा डॉ0 गोपीनाथ, *राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास,* जयपुर 1999
8. अग्रवाल डॉ0 श्याम बिहारी, *भारतीय चित्रकला का इतिहास* (मध्यकालीन)
9. नीरज डॉ0 जयसिंह, *राजस्थानी चित्रकला,* जयपुर
10. चौहान सुरेन्द्र सिंह, *राजस्थानी चित्रकला,* दिल्ली–1994